IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जनपद की प्रचलित लोक-गाथाओं का सांगीतिक पक्ष- एक अध्ययन

Himachal Pradesh Ke Sirmour Janpad Ki Prachalit Lok Gathaon Ka Sangeetik Paksha-Ek Adhyayan

डॉ0 राजेन्द्र सिंह तोमर

सहायक आचार्य संगीत-गायन

राजकीय महाविद्यालय हरिपुरधार,

जिला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश।

सारांश

हिमाचल प्रदेश जहां अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए भारतवर्ष ही नहीं बल्कि समूचे विश्वभर में प्रसिद्ध है उसी प्रकार यहां की लोक संस्कृति व लोक-संगीत भी यहां के प्राकृतिक सौन्दर्य की भांति मनोरम एवं सुदृढ़ है। लोक-संगीत प्रदेशवासियों के जीवन के हर पहलू से संपृक्त है जिसके लिए किसी विशेष अवसर की आवश्यकता नहीं रहती। इसका निर्वाह सहज ही होता जाता है। हिमाचल प्रदेश के बारह जिलों में जिला सिरमौर (एक प्राचीन रियासत) जो कालान्तर में हिमाचल प्रदेश के एक छोटे से जनपद में परिवर्तित हो गई, अपनी अनूठी लोक संस्कृति एवं लोक संगीत में अपनी अलग पहचान रखता है। यहां के लोग प्रत्येक मेले तथा त्यौहार को हंसी-खुशी विभिन्न लोकगीतों, लोक गाथाओं, लोक नृत्यों आदि के माध्यम से नाच-गाकर मनाते हैं। जिस तरह आर्य सभ्यता लोक परम्परा की देन है उसी प्रकार गाथाएं भी आर्य तथा आर्येतर संस्कृति से जुड़ी हैं। जिन उपादानों से धार्मिक गाथाओं का जन्म हुआ उन्हीं से ही क्षेत्र विशेष की लोकगाथा, लोक वार्ता तथा लोक कथाओं की उत्पति हुई होगी। सिरमौर जनपद के लोक गाथा गीत भी अधिकांश पौराणिक हैं। हार या हारूल नाम की इन लोक गाथाओं में वीरता एवं शौर्य का उल्लेख मिलता है। विषयानुरूप लोक संगीत के अन्तर्गत यहां लोक गाथाओं का चलन प्राचीन समय से पीढ़ी दर पीढ़ी पारम्परिक रूप से चला आ रहा है। यहां लोक गाथाओं के अन्तर्गत धार्मिक लोक गाथाएं जिनमें में देव स्तुति या देव महिमा का वर्णन मिलता है जैसे, शिरगुल, रामायण, गुग्गा इत्यादि। पौराणिक एवं ऐतिहासिक लोक गाथाओं में रमैण (रामायण), पण्डवायण या महाभारत, भर्तृहरि, राजा महीप्रकाशो री हार व टिकरी आदि लोक गाथाएं है। वीर गाथाओं में नायक की वीरता का बखान किया जाता है, इनके अन्तर्गत छीछा, होकू मिया, जगदेव, नेगी नोतराम, ठुण्डू कमरऊ आदि प्रमुख हैं। प्रेम अथवा बलिदान की गाथाओं के कथानक पूर्णतया प्रेम पर आधारित नहीं होते अपितु इसमें पति-पत्नी, माता-पुत्र के प्रेम अथवा स्नेह व प्रणय का घटनाक्रम गाथाओं में दृष्टिगोचर होता है। सिरमौर क्षेत्र में प्रचलित अधिकतर लोक गाथाएं दीपावली के अवसर पर गाने का प्रचलन है। सिरमौर ज़िले की रेणुका, शिलाई व राजगढ़ तहसीलों में लोक गाथाओं का गायन शादी-विवाह व अन्य खुशी के अवसरों होता है तथा शिरगुल व गुग्गा गाथाएं जन्माष्टमी, गुग्गा नवमी व दीपावली के अवसर पर गाई जाती हैं। स्थानीय भाषा में इन गाथाओं को हार, हारूल, गायण व बूढ़ो या बूढ़ू गायन आदि नामों से जाना जाता है। सिरमौर क्षेत्र की अधिकतर लोक गाथाओं का साहित्य लिखित रूप में उपलब्ध नहीं है। इसका चलन मौखिक रूप से ही एक लोक गायक से अन्य तक होता है। सांगीतिक दृष्टि से सिरमौर जनपद की लोक गाथाएं प्रदेश की लोक गाथाओं से कम नहीं हैं। सिरमौरी लोक संगीत में सांगीतिक तत्वों तथा लक्षणों का होना एक स्वाभाविक गुण है। संगीत जगत के निर्माण की परिकल्पना का सर्वाधिक श्रेय लोक संगीत को ही जाता है। सिरमौरी लोक संगीत का सांगीतिक पक्ष भी अत्यन्त विशद् एवं व्यापक है। यहां लोक संगीत के अन्तर्गत प्रचलित लोक गाथाओं के सांगीतिक अध्ययन से पता चलता है कि इन गाथा गीतों में

स्वर, राग, लय, ताल, रस, भाव तथा नर्तन आदि गुण प्राकृतिक एवं स्वाभाविक रूप में विद्यमान हैं। सिरमौरी लोक संगीत के अन्तर्गत लोक गाथाओं में सांगीतिक तत्वों एवं लक्षणों का वृहद स्वरूप देखने को मिलता है।

सूचक शब्द:- पौराणिक, आर्येतर, लोक वार्ता, पण्डवायण, रमैण (रामायण), कालान्तर, हारूल।

भूमिका-

किसी भी देश की संस्कृति की पहचान उस क्षेत्र की संस्कृति, लोककला, साहित्य एवं भाषा होती है। लोक गाथाएं भी इन्हीं के अन्तर्गत आती हैं। हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जनपद की लोक संस्कृति व लोक सांगीतिक परम्परा समूचे प्रदेश अपनी अलग पहचान रखती है। यहां लोक-संगीत के अन्तर्गत लोक-गीतों का लोक-जीवन व जन-साधारण के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। सिरमौर जनपद में विविध प्रकार के लोक-गीत व लोक गाथाएं प्रचलित हैं, जिनमें देवी-देवताओं की स्तुति, संयोग-वियोग, वीर-गाथाओं, राजाओं की प्रेम-गाथाओं व उनके कार्य-कलापों तथा हर्ष-वेदनाओं का वर्णन प्राप्त होता है। यह लोक-गीत व लोक गाथाएं स्थानीय बोलियों में ही सुनने को मिलते हैं।

सिरमौरी लोकगाथा गीतों का सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा ऐतिहासिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यहां लोक गाथाओं में परम्परागत विभिन्न सम्बन्धों के व्यवहारिक रूप के दर्शन होते हैं। यह लोकगाथा गीत कानों को माधुर्य, शान्ति, रस-अभिव्यक्ति तथा असीम आनन्द प्रदान करते हैं। यहां जन-मनोरंजन के क्रिया-कलापों से लेकर संस्कार सम्बन्धी अनुष्ठानों, मेलों व त्यौहारों प्रत्येक उत्सवों में लोक-गीतों लोक गाथाओं का साम्राज्य दृष्टव्य है। सिरमौरी लोक गाथाओं में अनेक गीत ऐसे हैं जो जन-मानस व जन-साधारण के हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़े हुए हैं।

सिरमौर जनपद का लोक-संगीत भी यहां के प्राकृतिक सौन्दर्य की भांति मनोरम एवं सुदृढ़ है जिसका क्षेत्रवासियों के जीवन के हर पहलू से नाता रहता है, जिसके लिए प्रायः किसी अवसर विशेष की आवश्यकता नहीं रहती है। 'सिरमौर' प्राचीन रियासतों में एक बड़ी रियासत थी, जो कालान्तर में हिमाचल प्रदेश के एक छोटे से जनपद में परिवर्तित हो गई। अपनी अनूठी लोक संस्कृति एवं लोक-संगीत की दृष्टि से जिला सिरमौर हिमाचल प्रदेश के बारह जिलों में अलग पहचान रखता है। यहां हर धर्म व जाति के लोग विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक अवसरों, मेलों व त्योहारों पर हंसी-खुशी विभिन्न लोकगीतों, लोक गाथाओं, लोक नृत्यों आदि के माध्यम से नाच-गाकर आनन्द विभोर होते हैं तथा अपना मनोरंजन करते हैं। सिरमौर ज़िले की रेणुका, शिलाई व राजगढ़ तहसीलों के अलग-अलग क्षेत्रों में एक विशेष बात यह है कि यहां का समाज दो गुटों, शाठी व पाशी में बंटा है, जिन्हें कौरव व पांडव का वंशज माना जाता है जिनका क्षेत्र में प्रचलित कुछ लोक गाथाओं में वर्णन स्पष्टत: उजागर होता है। सिरमौर जिला की पच्छाद तहसील के कुछ क्षेत्रों में भी इस तरह लोक गाथाएं सुनने को मिलती हैं।

सिरमौरी लोक गाथाओं का उद्भव एवं विकास:-

जिला सिरमौर की 'लोक गाथाओं' के उद्भव एवं विकास सम्बन्धी अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि लोक गाथाएं सिरमौरी लोक संगीत का एक अभिन्न अंग हैं, जिनका निर्वाह प्राचीन समय से परम्परागत रूप में होता चला आ रहा है। 'गाथा' से अभिप्राय गायन के उस प्रकार से है जिसमें कथा तत्व व गेय तत्व दोनों का सम्मिश्रण रहता है। यहां लोक गीतों की अपेक्षा लोक गाथाओं के कथानक अधिक लम्बे होते हैं जो अपने में एक इतिहास समेटे रखते हैं। सिरमौरी लोक गाथाओं के उद्गम काल का निश्चित अनुमान लगाना बहुत कठिन है। इस क्षेत्र की लोक गाथाओं का चलन प्राचीन समय से पीढ़ी दर पीढ़ी पारम्परिक रूप से होता चला आ रहा है। आज कोई भी गाथा गायक, लोक कलाकार अथवा बुजुर्ग इसके उद्भव का निश्चित समय बताने में असमर्थ है, किन्तु रामायण, पण्डवायण, गुग्गा तथा राजा भर्तृहरि आदि लोक गाथाओं का इस क्षेत्र में प्रचलन, किंचित इस बात की पुष्टि करता है, कि यहाँ गाथा गायन बहुत प्राचीन समय से चला आ रहा है।

सिरमौर जनपद में प्रचलित अधिकतर लोक गाथाएं दीपावली के अवसर पर या शादी-विवाह व अन्य किसी विशेष समारोह में खुशी के अवसरों पर गाई जाती हैं तथा शिरगुल व गुग्गा गाथाएं जन्माष्टमी व गुग्गा नवमी के अवसर पर ही इस क्षेत्र में गाई जाती हैं। स्थानीय बुजुर्ग या लोकगाथा गायकों के अनुसार गाथाओं के रचयिता को 'कोइंया' कहा जाता था।

कोइंया, क्षेत्र में घटित घटनाओं को अपनी क्षमतानुसार बोलों में ढालकर अपनी ही धुन बनाकर इन गाथाओं को जनमानस तक पहुंचाने का कार्य करते थे। अधिकांश लोक गीतों व लोक गाथाओं के रचयिता अज्ञात ही होते हैं। ये सभी रचनाकार स्वर, लय-तालादि का ज्ञान रखने वाले नहीं होते थे। कुछ ही गिने-चुने गायक ही स्वर , लय, ताल आदि का ज्ञान रखते हैं । ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इनकी रचनाओं का अनुसरण पीढ़ी दर पीढ़ी आज भी होता आ रहा है।

सिरमौर जनपद की प्रचलित सभी लोक गाथाओं की समयावधि भी समान नहीं है। लोक गाथा गायकों का मानना है कि रामायण, गुग्गा व भर्तृहरि इत्यादि लोक गाथाओं को छोड़कर अन्य सभी गाथाएं लगभग 100 से 300 वर्ष तक पुरानी हैं। इन लोक गाथाओं का लिखित अथवा संग्रहित प्रमाण भी नहीं मिलता है । जिला सिरमौर में गाई जाने वाली कुछ प्रचलित लोकगाथाओं के नाम निम्नत: हैं:-

नेगी नोतराम	नागू रेडू
ठुण्डोऊ-शिंगटोऊ	होकू मिंया
सिंगा बजीर	छीछा
कानिया -सुबनी	बीणी
पोरसा	झांखो अजबा रा पवाड़ा
सिधू री टिकरी	जिणिया
सामा-दोलतू	बिंची
शुंगड़ाई/जगदेव	महीप्रकाशो री हार
छुमकू	गुग्गा
कमना	रामायण
जारो रा गीत	पण्डवायण/महाभारत
चाय रा गीत	रमैण/रामायण
ठुण्डू	भरथरी/भर्तृहरि
मासती	न्यौंदी री हार
मदना री हार	

सिरमौर जनपद की लोक गाथाओं को चार वर्गों में रखा जा सकता है:-

1. **धार्मिक लोक गाथाएं :-** इन लोक गाथाओं में ईश्वर स्तुति, देव स्तुति या देव महिमा का वर्णन मिलता है, जैसे- शिरगुल, भर्तृहरि रामायण, व गुग्गा इत्यादि ।
2. **पौराणिक एवं ऐतिहासिक लोक गाथाएं** :- इन लोक गाथाओं के अन्तर्गत रमैण (रामायण), पण्डवायण या महाभारत, राजा महीप्रकाशो री हार व सिधू री टिकरी आदि गाथाओं को रखा गया है।
3. **वीर गाथाएं :-** सिरमौरी क्षेत्र में वीर गाथाओं का आधिक्य है । इन गाथाओं में नायक की वीरता एवं शौर्य का वर्णन मिलता है, चाहे वह युद्ध जीते, हारे अथवा लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुआ हो। इनके अन्तर्गत छीछा, होकू मिंया, जगदेव, नेगी नोतराम, ठुण्डू-कमरऊ आदि प्रमुख हैं ।
4. **प्रेम व बलिदान गाथाएं :-** इन लोक गाथाओं के कथानक प्रेम पर आधारित नहीं होते अपितु इसमें मुख्यत: पति-पत्नी, माता-पुत्र के प्रेम अथवा स्नेह का घटनाक्रम गाथाओं में अवलोकित रहता है ।

सिरमौर क्षेत्र की अधिकतर लोक गाथाओं का साहित्य लिखित रूप में न होकर इसका चलन मौखिक रूप से ही एक लोक गायक से दूसरे लोक गायक तक होता है। अतः कालान्तर में गाथाओं के गायन व साहित्य में थोड़ा बहुत अन्तर आना स्वभाविक है। इन गाथाओं में स्वर लय, ताल, वाद्य एवं नृत्य का समावेश भी व्यापक रूप में देखा जा सकता है। इस क्षेत्र में प्रचलित लोक गाथाओं में अधिकतर स्थान विशेष का वर्णन मिलता है तथा उसी क्षेत्र में वह विशेष गाथा अधिक गाई जाती हैं, जिस पर स्थानीय लोग गौरान्वित होते हैं। यहां लोक गाथाओं में एक विशेषता है कि यह लम्बे-लम्बे कथानकों से निर्मित हैं जिनमें पात्रों के जीवन का चित्रण समाहित रहता है। अधिकतर लोक गाथाएं ऐतिहासिकता का पुट लिए हुए रहती हैं। सभी

गाथाओं के गायन में टेक पदों की पुनरावृत्ति की जाती है जो कि मुख्य गायक को थोड़ा विश्राम प्रदान करती है और गाथा में ठहराव की अनुभूति होती है। जिला सिरमौर की एक प्रसिद्ध लोकगाथा 'होकू मियां की हार' के बोल प्रस्तुत हैं:-

होकू मियां की हार

प्रस्तुत हार या हारूल गीत में 'होकू मियां' नामक वीर योद्धा की अद्भुत वीरता का वर्णन मिलता है। लगभग 300 वर्ष पूर्व राजा बुद्ध प्रकाश (1664-1681) के देहावसान के पश्चात् शासन की बागडोर दोलू मेहता नामक बजीर के हाथों में सौंपी गई। 'दोलू मैहता' ने स्थानीय जनता पर मनमाने ढंग से अत्याचार करने आरम्भ कर दिए थे। परिणामस्वरूप होकू मियां नामक योद्धा ने 500 नवयुवकों की फौज तैयार करके तथा अन्याय व अत्याचार के विरूद्ध नाहन जाकर तत्कालीन शासक के विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया। होकू मियां को धोखे से मार दिया गया। 'होकू मियां' की वीरता की लोकगाथा का गीत प्रस्तुत है-

हो बोलो भोईयो देणा लाशां दूड़ो बे म्हारे लाणा पाछड़े पाई रो बे।
पाछड़े आखरो बे चारो होकू री देणी आगड़े दी लाई-।
होकू लगी सिंगटे मियां नोईणी दी बाई,
हांडो आणो एकाई नोयणी के जाई-।
बाज लो बाजगो बाजो गाई रा बाणा,
राजा गिया सोमाई हुआ दोलू मोहते रा जाणा-।
बाटो बोट दे मियां पाछु होला हेरी,
ठाई छुटी घुण्डोरी मियां कोलिमो री सेरो-।
आई गोई मियां तेरी डुबणो री बूधो,
भात छुड़ो जीरी झिझली रो झोटड़ी दूधो -।
नादा रोआ बोदा मियां जोमटे खे जाई,
जोमटे री देवी लोई मियांए शाई -।
साचो बुली देविए का सुनो दो तेरी,
जीता आऊँगा भारतो ताखे देऊं छेली-।
जोमटे री देवियो शुणी न बुणो,
तांदी रोई रावता तोबे राजपूती आई,
लाई जूते रावता देवी दी लाई-।
सेजे कारे देवीए मोनो भाऊले तेरे,
राजा सुती भारतो जीती लाऊंणों मेरे-।
बाटो मिटो ओदमो मियां टुड टुडउलिया री हाटो,
लांदे क्या नी तुएं हाटियो नोइणी री बातो-।
बातो जाणी नोइणी री मियां जाई रोइली खुटी,
नोइणी पाकी रोई भीतरी दोलू मोहते री रोटी-।
दोलू लागा रावतो होकू रा डोरो,
बाला थिया राजा साहिबा उबा गोदी दा कोरो-।
तोबे लागा सिंगटा मियां बरादुवारी दा जाई,
भेंट राज के भुरो पाई जय दिया शाई-।
दोलू बोलो मोहतेया ला सोमझी री बातो,
गाली देइला जे मुखे, काटी पाणी जातो-।
होकू मियां रावतो तोबे मुजरे दा जाई,

तोबे गिया नेगी जुलफिया सामणे आई-।
देखो होकू उबी मियां लोगो दा खोई,
ईंट मारी बाणिए लोऊ लुहान गिया होई -।
होकू रावतो री पोड़ी ड़योड़ी गे लाशो,
तेसरा होआ बयालखे खे सूरमो बाशो-।

ज़िला सिरमौर में लोक गाथा गायन का प्रचलन परम्परागत रूप से चला आ रहा है । स्थानीय भाषा में इन गाथाओं को हार, हारूल, गायण व बूढ़ो या बूढ़ःगायन इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। किसी क्षेत्र में लोक गाथा गायक उपलब्ध न होने की स्थिति में अन्य क्षेत्रों से (गाँव से) इन्हें आमन्त्रित किया जाता है । सिरमौर जनपद में इन सभी गाथाओं को गाने के भी अलग-अलग ढंग हैं । कुछ गाथाएं केवल एक ही व्यक्ति द्वारा गाई जाती हैं तो कुछ पांच-छ: व्यक्तियों के समूह द्वारा गाई जाती हैं तथा कुछ गाथाओं को दो-दो व्यक्तियों के समूह में भी गाया जाता है। इन गाथाओं को अधिकतर पुरूष गायक ही गाते हैं। महिलाएं विवाहादि, खुशी के अवसरों पर ही भर्तृहरि, रमैण (रामायण), पण्डवायण (महाभारत) आदि गाथाएं गाती हैं। दीपावली के अवसर पर गाई जाने वाली लोक गाथाओं को जाति विशेष के लोगों द्वारा ही गाया जाता है। आजकल कुछ एक उच्च जाति से सम्बंधित कलाकार भी अपने शौक के तौर पर लोक गाथाओं को नृत्य के साथ अपने-अपने समूह में गा लेते हैं जिसे 'मुजरा' व 'गीह' भी कहा जाता है । विभिन्न स्थानीय उत्सवों, मेलों एवं त्यौहारों में लोकगाथा गायन द्वारा जनपद विशेष के प्रति उनके प्रेम व योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है ।

सिरमौरी लोक गाथाओं का सांगीतिक पक्ष:-

लोक संगीत एवं शास्त्रीय संगीत का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है उसी प्रकार तथा लोक गाथाओं एवं लोक संगीत एक-दूसरे से सम्पृक्त हैं । सिरमौरी लोक गाथाओं के सांगीतिक पक्ष अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि यहां लोक गाथाओं में राग तत्व स्वर, स्वर-सम्वाद, लय, ताल, रस व भाव का समन्वय देखने को मिलता है । लोक गाथाओं के गायन में विभिन्न रागों की छाया, स्वर लगाव, विविध तालों का प्रयोग रहता है। शास्त्रीय संगीत की दृष्टि से सिरमौरी लोक गाथाओं के विषय में सांगीतिक पक्ष के अध्ययन द्वारा जनमानस को जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

स्वर-व्यवस्था:-

सिरमौरी लोक गाथाओं में अधिकतर तीन-चार स्वरों से लेकर सात स्वरों की गाथाओं का गायन दृष्टव्य हैं। उदाहरण के लिए-ठूण्डू-कमरऊ नामक गाथा में केवल तीन-चार स्वरों का ही प्रयोग मिलता है । इसी प्रकार बिंची, पण्डवायण आदि गाथाओं में केवल चार ही स्वरों का प्रयोग किया जाता है। तीन स्वरों से युक्त गाथा रामायण का स्वरूप भी यहां पर देखा गया है । यहां प्रचलित लोक गाथाओं में औडव, षाडव व सम्पूर्ण जातियों का व्यवहार प्राप्त होता है ।

यहां लोक गाथाओं में षड़ज स्वर आधार स्वर के तौर पर ही प्रयोग होता है। लोक गाथा गायक अपने कंठ की क्षमता के अनुसार भिन्न-भिन्न लोक गाथाओं के गायन के लिए किसी भी स्वर को आधार मानकर गायन करते हैं । यह आधार स्वर अधिकतर ऊँचा ही होता है। अधिकतर मध्यम स्वर ही गाथा गायकों का आधार स्वर होता है । अलग–अलग लोक गाथाओं की स्वर संरचनाएं, स्वर-साम्य होने के बावजूद भी, विशेष स्वरों पर ठहराव अथवा न्यास के कारण बिल्कुल अलग सुनाई पड़ती हैं। सिरमौर जनपद में प्रचलित अधिकतर लोक गाथाएं चार या पांच स्वरों तक ही सीमित होती हैं किन्तु कुछ गाथाओं में मन्द्र व तार स्वरों का प्रयोग भी दृष्टिगोचर होता है ।

उदाहरणस्वरूप - 'नेगी नोतराम', बिंची' व 'चाय रा गीत' आदि लोक गाथाओं में मन्द्र स्वरों को स्पष्ट सुना जा सकता है। वहीं 'भर्तृहरि' व 'झाखों रा पवाड़ा' आदि गाथाओं में गाथा की उठान ही तार सप्तक की ओर होती है । लोक गाथाओं में शुद्ध एवं विकृत दोनों प्रकार के स्वरों का प्रयोग किया जाता है। कोमल गन्धार,कोमल धैवत तथा कोमल निषाद का प्रयोग बहुत सी लोक गाथाओं में किया जाता है। एक ही स्वर के दोनों रूप भी कई गाथाओं में सुनने को मिलते हैं।

शुद्ध स्वरों का प्रयोग नागू, पण्डवायण, छुमकू व शंगड़ाई इत्यादि गाथाओं में होता है। कोमल गन्धार का प्रयोग 'देशू की हार' नामक लोक गाथा में देखा जा सकता है । इसी प्रकार कोमल निषाद का प्रयोग छीछा, रामायण, बीणी, नेगी नोतराम आदि गाथाओं में तथा दोनों निषाद का प्रयोग भर्तृहरि व झाखो रा पवाड़ा नामक गाथा में स्पष्ट देखा जा सकता है । कोमल धैवत का प्रयोग भी 'टिकरी' गाथा में किया जाता है। इन गाथाओं में प्रयुक्त एक ही स्वर के दोनों रूपों का प्रयोग कभी-कभी लोक गायकों की अनायास चेष्टा तथा अनाभ्यास के कारण भी हो सकते हैं। उदाहरण प्रस्तुत है-

- 'सिधू री टीकरी' लोक गाथा की स्वरलिपि -

प - प -	ध म ग रे	ग म - गरे	सा - - प
की ऽ ये ऽ	रे ऽ मो ऽ	ला ई ऽ लाऽ	ऽ ऽ ऽ हे
प प प ग	रे ग म गरे	रे - रे सा	- - - ग
हा थी णो बे	जा ऽ णी ला	डीऽ णो ऽ ना	ई ऽ ऽ हे
X	2	3	4

उपरोक्त गाथा की प्रथम पंक्ति में प ध म ग रे, ग म ग रे सा, स्वर समूह के प्रयोग से आज के प्रचलित 'राग किरवानी' का आभास होता है। यद्यपि शुद्ध निषाद का प्रयोग इसमें नहीं होता परन्तु गाथा के श्रवण से उपरोक्त राग की झलक परिलक्षित होती है। जबकि दूसरी पंक्ति में प म ग रे ग म ग रे सा के प्रयोग से 'राग काफी' का पूर्वांग झलकता है।

- 'सामा-दौलतू' लोक गाथा की स्वरलिपि-

नि सा - नि	ध - प म	म म ग -	म - प -
कि ए ऽ री	ऽ ऽ मू ऽ	ला ई ऽ ऐ	बे ऽ ला ऽ
म प - म	ग रे म ग	रे रे रे सा	- - प प
बां डे ऽ गा	शे ऽ सा मा	दो ली तू ऽ	ए ऽ हे ऽ
X	2	3	4

इसमें सां नि ध प म ग तथा प म ग रे म ग रे सा स्वर समूहों से 'राग काफी' की स्पष्ट छाया दृष्टव्य है।

स्वर-संवाद:-

संगीत के क्षेत्र में स्वर-सम्वाद भाव को विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। सम्वाद का अर्थ सम्यक बोलना अर्थात 'सम्यक' में मधुर, अनुकूल, सदृश अनुरूप आदि माना गया है। संगीत में रंजकता तथा मधुरता का आधार, स्वरों के परस्पर सम्वाद भाव को ही माना जाता है। गायन अथवा वादन में स्वर-संवाद अत्यंत आवश्यक है । यहां लोक गाथाओं में सा-म, सा-प सा-ग व सा-ध स्वर आसानी से सुने जा सकते हैं जो इन गाथाओं को और अधिक रंजकता व माधुर्य प्रदान करते हैं। अलग-अलग गाथाओं में भिन्न-भिन्न स्वरों पर न्यास भी इन्हें एक-दूसरे से पृथक करता है । "ध़सा, सा ग, नि़रे, रे म" आदि स्वर-संगतियों का प्रयोग लोकगाथाओं की मधुरता को सहज ही बढ़ाता है।

सिरमौरी लोक गाथाओं में स्वर-सम्वाद के मुख्य दो प्रकार हैं पहला- 'सा-म' तथा दूसरा 'सा-प' के रूप में स्पष्टतः झलकता है। लोक गाथाओं का आधार स्वर प्रायः मध्य सप्तकीय मध्यम के समान प्रयुक्त होता है। अतः लोक गाथा गायक जब आरम्भ में आलाप स्वरूप 'आऽऽऽऽऽऽ ' में लोक गाथा गीत स्वरूप तैयार करते हैं तो उनके कंठ से निकला सहज मूल स्वर षडज, मध्यम स्वर से ढका हुआ रहता है, क्योंकि लोक गायक द्वारा प्रयुक्त यह मूल स्वर ऊंचा तथा प्रायः मध्य स्वर के समानांतर होता है, इसलिए इस षडज के साथ मंद्र पंचम का सम्वाद अधिक युक्ति संगत एवं रंजक प्रतीत होता है। लोक गाथाओं के मूल स्वर 'म' के साथ मन्द्र 'प' का सम्वाद एक विशेष रंजक तत्व के रूप में उभर कर आता है। अतः स्पष्ट है कि इसी 'प-सा' सम्वाद को क्रमशः 'सा-म' माना जाये तो हमें ज्ञात होगा कि मध्यम स्वर लोक गाथाओं का एक आवश्यक स्वर है तथा अत्यंत रंजक भी होता है। स्वर-सम्वाद के संबंध में एक अन्य रोचक बात यह भी है कि सिरमौरी लोक गाथाओं में 'सा-म', 'सा-प', के अतिरिक्त 'सा-ग' स्वर-सम्वाद भी सुनने को मिलता है।

सिरमौरी लोक गाथाओं में 'रामायण 'में 'षडज-गंधार' स्वर-संवाद झलकता है। यहां लोक गाथाओं में 'सा-प' स्वर-सम्वाद भी मधुर भाव नियोजन करता है। 'छुमकु' तथा 'टिकरी' नामक लोक गाथाओं में 'सा-प' संवाद भाव व 'सा-म' संवाद भाव स्पष्टतः देखा जा सकता है। कुछ लोक गाथाओं में 'सा-ध' स्वर-संवाद देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए परसा, शुंगड़ाई, होकू मिंया आदि लोक गाथाओं में 'सा-ध' स्वर-संवाद दृष्टव्य है।

स्वर संगतियां व न्यासः-

सिरमौरी लोकगाथाओं की स्वर रचनाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इनके गायन में अनेक स्वर संगतियां बड़े सहज रूप में प्रयुक्त हुई हैं। धःसा, सा म, सां प, सा ग, निःरे, रे म, रे नि, ध म, रे ग म ग, निःरे म, ध ग, निःध सा सां तथा नि ध नि सां इत्यादि स्वर संगतियां विभिन्न लोक गाथाओं में विविध प्रकार से व्यक्त हुई हैं। इनके प्रयोग से लोक गाथाओं के स्वर पक्ष का महत्व और अधिक उभर कर सामने आता है।

सिरमौरी लोक गाथाओं में प्रयुक्त स्वरावलियों के अध्ययन के आधार पर स्वर-न्यास मुख्यतः मध्य सप्तक के षड़ज पर, ऋषभ, गंधार, मध्यम, धैवत, शुद्ध निषाद, कोमल निषाद तथा तार सां आदि स्वरों पर देखा जा सकता है। अधिकतर न्यास क्रम इस प्रकार हुआ सा, रे, ग, म, ध, नि, नि, सां।

राग छायाः-

सिरमौर जनपद की लोक गाथाओं में राग की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से नहीं होती है परन्तु कुछ लोक गाथाओं में रागों की अस्पष्ट छाया सुनने को मिलती है। यहां लोक गाथाओं में प्रयुक्त स्वर प्रयोग के आधार पर ज्ञात होता है कि अधिकांश लोकगाथाओं में राग खमाज, भीमपलासी, काफी, जै-जैवन्ती, पीलू, किरवानी, देश, सारंग, भूपाली, झिंझोटी, मेघ, बिलावल, दुर्गा, रागेश्वरी, तिलक कामोद, मध्यमाद सारंग तथा जोग आदि रागों की छाया का आभास किया जा सकता है। कुछ लोक गाथाओं में लोक कलाकारों द्वारा जाने-अनजाने कभी-कभार खटका, कण, मुर्की तथा मींड का प्रयोग अवश्य सुनने को मिलता है।

सिरमौरी लोक गाथाओं में भाव पक्षः-

सिरमौरी लोक संगीत के अन्तर्गत लोक-गाथाओं में कला पक्ष की अपेक्षा भाव पक्ष को अधिक महत्व दिया जाता है जिस कारण सांगीतिक अलंकरण इनमें गौण रहते हैं। लोक गाथाओं में श्रोता तथा गायक वृन्द इसके साहित्यिक पक्ष पर अधिक ध्यान देते हैं। स्थानीय लोक गाथाओं में वर्णित विषय जिसमें युद्ध, वीरता, साहस एवं रोमांच का पुट अधिक रहता है। लोक गाथाएं कथा विशेष पर आधारित होती हैं जिनका कथानक बहुत लम्बा होता है। गायन की सहायता से इनकी कथावस्तु को जनसाधारण तक पहुंचाया जाता है। इनके सांगीतिक पक्ष को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। लोक गाथाओं के साहित्यिक पक्ष व कलापक्ष दोनों का मिश्रित रूप श्रोताओं को विभिन्न रसों एवं भावों की निष्पत्ति कराता है।

जिला सिरमौर की अधिकतर गाथाएं वीर रस की परिचायक हैं जिनसे अनायास ही उत्साह का भाव परिलक्षित होता है। वीरतापूर्ण गाथाओं को गाने की परम्परा सिरमौर क्षेत्र में प्राचीन समय से चली आ रही है। राजा-राणाओं के परस्पर युद्ध व शौर्य, स्थानीय जनता द्वारा अन्याय के विरूद्ध विद्रोह आदि ऐसी घटनाओं का वर्णन यहां गाई जाने वाली हारुलों में मिलता है। हुड़क वाद्य पर हाथ की थाप पड़ते ही पूरा वातावरण वीर रस से सराबोर हो जाता है। इन गाथाओं में 'होकू मिंया की हार,पोरसा, छुमकू, सामा-दौलतू, नेगी नोतराम' की हार आदि प्रमुख हैं। शिलाई क्षेत्र की 'कानिया-सुबनी' व रेणुका क्षेत्र की 'मासती गाथो' श्रृंगार रस दर्शाती हैं। इस प्रकार 'रामायण' व 'भर्तृहरि' की गाथाओं में शोक भाव व करुण रस की अनुभूति अनायास ही हो जाती है। इन्हीं गाथाओं से ही शांत रस भी स्पष्टत: झलकता है। हास्य रस के अन्तर्गत 'जिणिया' नामक गाथा को रखा गया है, जिसका आस्वादन श्रोता इस गाथा के साहित्य को सुनकर कर सकता है।

सिरमौरी लोक गाथाओं में रस निष्पतिः-

संगीत में रस की अवधारणा जहां ध्वनि, ताल और स्वर के कलात्मक आरोह-अवरोह के माध्यम से उपस्थित की जाती है वहीं काव्य में रस निष्पत्ति, शब्द शक्ति के छन्दबद्ध कलात्मकता के संयम से सिद्ध होती है। साहित्य तथा संगीत कला अपना

स्वतंत्र अस्तित्व रखते हुए भी अन्योनाश्रित हैं। इसलिये संगीत एवं काव्य में एक अटूट सम्बन्ध माना गया है। सिरमौर जिले की लोक गाथाओं में उपरोक्त दोनों तत्वों का समावेश बखूबी पाया जाता है। इस क्षेत्र में लोक गाथाओं का साहित्य जहां अति सुदृढ़ है वहीं इन गाथाओं में प्रयुक्त स्वारावलियां साहित्यिक छन्दों के अनुरूप विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति एवं रस निष्पत्ति करती हैं।

सिरमौर ज़िले की प्रचलित लोक गाथाओं को मुख्यतः श्रृंगार, करूण, वीर, शांत तथा हास्य रसों के अंतर्गत रखा जा सकता है । शिलाई क्षेत्र की 'कानिया-सुबनी' व रेणुका क्षेत्र की 'मासती गांथो' श्रृंगारिकता का पुट लिये हुये है। 'बिन्ची' एवं 'झाखों अजबा का पवाड़ा' करूण रस व शोक भावों को व्यंजित करते हैं। रामायण एवं भर्तृहरि गाथाएं शांत रस की परिचायक हैं तथा जिणिया गाथा में किंचित हास्य रस की निष्पत्ति होती है ।

सिरमौर क्षेत्र की गाथाओं में यह विशेषता पाई जाती है कि यहां पर वीर गाथाओं का अत्यधिक प्रचलन है। इनमें मुख्यतः छीछा, होकू मियां, बीणी, शिरगुल, परसा, जगदेव तथा नेगी नोतराम इत्यादि हैं जिनमें उत्साह के भाव दृष्टिगोचर होते हैं जो कि वीर रस की निष्पत्ति करते हैं।

वीर रस युक्त गाथाएं-

सिरमौर जनपद में अधिकतर वीर रस से युक्त गाथाओं का चलन है। इन गाथाओं में रस निष्पत्ति का मुख्य स्रोत इसका काव्य अथवा साहित्य पक्ष है। स्वर और ताल पक्ष गौण रहता है। जिस प्रकार 'छिछा' एवं 'नेगी नोतराम' की गाथाओं में प्रयुक्त काव्य की पंक्तियों से सहज ही वीर रस का आभास होता है।

जेबी काटे आणे नेगिया मुगलो री शीरी कालसी देउंए तोंसलो, बोइठी बोज़ीरी ।

भावार्थः– नेगी नोतराम यदि तुम मुगलों के सिर काट कर ले आओगे तो तुम्हें कालसी की बजीरी दे दी जायेगी ।

वीर रस से युक्त इस क्षेत्र की गाथाओं में महीप्रकाशो री हार, मदना, न्यौंदी, टिकरी, होकू मिंया, कमना, नागू, जगदेव, परसा व बीणी इत्यादि हैं। वीर एवं करूण रस से युक्त एक अन्य गाथा कमना की हार नाम से गाई जाती है ।

कीरचन्दे खलणे लाणे दा कोमना पाया धाए
समाई देइए मालकोरा लीया बोदला चुकाए ।

उपरोक्त पंक्तियों में से प्रथम में कीरचन्द द्वारा कमना को खलणे लाणे में मौत के घाट उतारने में जहां करूणता का आभास होता है वहीं दूसरी पंक्ति में उसकी पत्नी द्वारा उसका बदला चुकाने की बात कही गई है जो कि समाई देवी की वीरता का धोतक है।

भक्ति और वीर रस युक्त गाथाएं-

गुग्गा, रामायण, पण्डवायण,भर्तृहरि एवं शिरगुल इन गाथाओं में भक्ति और वीर रस का संयुक्त रूप से समावेश रहता है। उदाहरण स्वरूप शिरगुल गाथा की पंक्तिया इस प्रकार है

ऐबे धाव शुणी रे बोइणों केरी चाली रे
कोरे देवते रा देवा मेरा होजूरा ।

शिरगुल देवते की इस लोकगाथा में भाव यह है कि - हे ग्राम वासियों, मेरी आवाज सुनो, तुम कहां जा रहे हो, आओ और देवते का गुणगान करो। इन पंक्तियों से भक्ति भाव स्पष्ट होता है । एक अन्य पण्डवायण गाथा में अर्जुन के रथ व उसकी वीरता दर्शायी गई-

कोरी बे देणा खोड़ा रे रोथी मेरा मुईदोना दा
कोरी बे देणा खोड़ा रे रोथों मांइदा होरीजनों।

उपरोक्त पंक्तियों में अर्जुन कुरूक्षेत्र के मैदान में अपना रथ खड़ा करने की बात कहता है। साथ ही अर्जुन को रथ से उतारकर युद्ध क्षेत्र में उतारने का भी वर्णन ये पंक्तियां करती है। पण्डवायण गाथा में पाण्डवों की वीरता के वर्णन के साथ-साथ यह गाथा जनसाधारण में भक्ति भाव को भी जागृत करती हैं। साथ ही रामायण, महाभारत, भरतृहरि, गुग्गा, शिरगुल आदि सनातन समाज की आध्यात्मिक आस्था के परिचायक हैं।

श्रृंगार एवं हास्य रस युक्त गाथाएं-

इस क्षेत्र की मासती गाथा,श्रृंगार रस एवं रति भाव की द्योतक हैं ।

यथा चिठी लिखो गांथो, रूणे रा हिणिकु लाई

शीधा लागा मोइला, आण्डा पाऊणा आई ।

'मासती' रेणुका के थोमलो गांव की निवासिनी अपने प्रेमी को पत्र लिख रही है । हिचकी के साथ उसको रोना भी आ रहा है। वह अपने प्रेमी को लिखती है कि –हे, मोइल (क्षेत्र) के निवासी तू हमारे गांव मेहमान बनकर चला आ ।

'जिणिया' गाथा को लोग हंसी मजाक के उद्देश्य से गाते व सुनते हैं । चैत्र मास में जाति विशेष के लोक गायक गांव-गांव जाकर इस गाथा को लोगों को सुनाकर उनका मनोरंजन करते हैं । इस गाथा के कई छन्द अनायास ही हास्य उत्पन्न करते हैं। जिणिया अपने गहने लूटे जाने पर झूठा कारण बताकर अपनी पत्नी से कहता है कि उसके गहने बाढ़ में बह गए हैं जिसके उत्तर में उसकी पत्नी व्यंग्यात्मक रूप से ये पंक्तियां कहती है:-

चोइचो रे म्हीने लूंडा, पालरो ताखे

तों मेंडके लोखो ले न पाण्डे ।

वह कहता है कि चैत्र मास में तो बहुत बाढ़ आती है जिसे मेंढक भी पार नहीं कर सकते हैं । भाव यह कि चैत्र के मास में इस क्षेत्र में बाढ़ आने का तो प्रश्न ही नहीं उठता और वह गहने खोने का यह कारण नहीं हो सकता । उपरोक्त गाथा में हास्य का आभास किया जा सकता है जो अनायास ही जन मानस का मनोंरजन करता है।

लय एवं ताल:-

लोक संगीत में भी शास्त्रीय संगीत की तरह लय एवं ताल की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है जो कि गायन, वादन अथवा नृत्य के लिए अलंकरण का कार्य करती है । सिरमौर जनपद की लोक गाथाओं में बिलम्बित, मध्य एवं द्रुत तीनों लयों का प्रयोग देखने को मिलता है। इन गाथाओं के साथ तीनताल, दीपचंदी, दादरा (खेमटा), कहरवा आदि तालों के सदृश स्थानीय बूढ़ू, गीह, नाटी, रासा, गुग्गा, जिणिया आदि तालों का प्रयोग होता है । इन सभी तालों का अपना विशेष महत्व है जिसका अधिक आनन्द इस जनपद के लोग ही उठा पाते हैं । कुछ तालों की मात्राएं व बजाने का ढंग शास्त्रीय तालों के अनुरूप होते हुए इन तालों की एक विशेषता यह भी है कि इनमें ताली-खाली अथवा सम-खाली के प्रयोग का भी अपना ही ढंग है । यहां की लोक गाथाओं में प्रयुक्त होने वाली तालों में गीह, नाटी, बूढ़ू, रासा, गुग्गा व जिणिया ताल प्रमुख हैं। सिरमौरी लोक संगीत के अन्तर्गत ढोल, नगाड़ा, दमामटू आदि वाद्यों पर लय एवं सरल लोक तालों का वादन किया जाता है तथा लोक वाद्यों पर शास्त्रीय संगीत के समरूप बोल निकाले जाते हैं। चूंकि यह बोल स्थापित एवं सर्वमान्य नहीं हैं और न ही वाद्यों पर इनके उद्गम स्थानों के विषय में एकमत है, अतः स्थानीय कलाकार इन्हें अपने-अपने ढंग से उच्चारित करते हैं ।

- **ढोल वाद्य पर दाएं हाथ से छड़ी द्वारा प्रहार करने से उत्पन्न बोल:-** ता, ना, ताणि, तांनण, तिर, तक, तृक, तृग, किनणतां, आदि।
- **बाएं हाथ के प्रहार से उत्पन्न बोल:-** धे, गे, ग, ध, गिदि, घेघे, धेगे, किड़, कड़ आदि
- **संयुक्त बोल-** झां, तिरकिड़, तक धिना, तागे - धिण, कड़ान, धिड़ान, धिनड़, किड़झां, झागेतां, तड़ान आदि। नगाड़ा वाद्य पर भी ढोल वाद्य के समान ही बोलों को निकाला जाता है, जो लय व ताल के निर्माण में सहायक हैं ।

इसी प्रकार हुड़क वाद्य पर बजने वाले बोल झिं, झांऊ, झें, ज़क, झिंऊ इत्यादि । उपरोक्त बोल मुख्यत: दांए हाथ से ही बजाए जाते हैं। इस ताल में वाद्य की विशेषता यह है कि बांए हाथ से दबाव डालकर इसकी डोरियों पर खिंचाव द्वारा गूंज उत्पन्न की जाती है जो अप्रत्यक्ष रूप से दांए हाथ से बजाए गए बोलों को सहायता प्रदान करती है ।

जिला सिरमौर की लोकगाथाओं में बहुत अधिक तालों का व्यवहार नहीं मिलता है परन्तु यहां कई लोकगाथाएं इस प्रकार गाई जाती हैं जिनमें विभिन्न तालों का व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। सिरमौरी लोकगाथाओं में प्रयुक्त लोक तालों का विवरण प्रस्तुत है। उदाहरण स्वरूप लोक गाथाओं में प्रयुक्त होने वाली तालों का परिचय प्रस्तुत है -

गीह/मुजरा/नाटी ताल-

सिरमौर जनपद में प्रचलित लोक गाथाओं के गायन व नाटी, 'गीह' व 'मुजरा' नृत्य के साथ बजाई जाने वाली यह लोक ताल सर्वाधिक लोकप्रिय है। इस ताल का नामकरण उक्त नृत्य शैली के आधार पर ही हुआ है। यह लोक ताल ढोलक तथा

खंजरी वाद्यों पर बजाई जाती है। लोक वादक ढोलक वाद्य के बाएं पुड़े पर एक विशेष प्रकार की 'घूर' (मध्यमा ऊंगली से विशेष ध्वनि उत्पन्न करना) अर्थात ध्वनि के साथ 'गीह या मुजरा ताल' का वादन अत्यन्त सहजता से करते हैं। तीनताल के समतुल्य 16 मात्रिक 'गीह ताल' को ताली के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है –

<u>प्रथम प्रकार</u> **(मात्रा - 16, विभाग - 4)**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धिं	कड़	धिं	ना	धिं	धिं	ना	किड़	धिं	धिं	ना	किड़	धिं	ना	घिड़	घिड़
x				2				3				4			

<u>द्वितीय प्रकार</u> (मात्रा - 16, विभाग - 5, ताली - 5)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
घिड़	घिड़	धिं	ना	धिं	धिं	ना	किड़	धिं	धिं	ना	घिड़	धिं	ना	घिड़	घिड़
x			2		3					4		5			

'गीह या मुजरा ताल' में पहली, चौथी, सातवीं, ग्यारहवीं तथा तेरहवीं मात्राओं पर तालियों का सुन्दर प्रयोग देखने को मिलता है।

जिणिया ताल

सिरमौर जनपद में चैत्र मास में 'डूम' जाति के लोग गांव-गांव जाकर 'जिणिया' नामक व्यक्ति की लोक-गाथा को गाते हैं। इस लोक गाथा के साथ 'ढाकुली वाद्य' (एक डमरूनुमा वाद्य) पर 'जिणिया ताल' को बजाया जाता है। यह लोकताल ढाकुली वाद्य पर बांस की छड़ियों से बजाई जाती है। सात मात्रिक 'जिणिया ताल' का चलन 'रूपक ताल' के समान प्रतीत होता है। जिणिया ताल के बोल प्रस्तुत है-

1	2	3	4	5	6	7
ढीं	ऊँ	ऊँ	ढीं	ऊँ	ऊँ	ऊँ

रासा ताल-

रासा ताल में नेगी नोतराम तथा ठुण्डऊ-शिंगटऊ की गाथा को द्रुत लय में गाया जाता है। इस ताल में विभिन्न उत्सवों पर स्थानीय लोगों को नाचते-गाते देखा जा सकता है। रासा ताल में 12 मात्राएं और 4 विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग में 3-3 मात्राएं होती हैं। पहली, चौथी, सातवीं और दसवीं मात्रा पर क्रमशः आघात प्रबलता से किया जाता है। इस ताल को हुड़क व दमामा वाद्यों पर एक साथ बजाया जाता है अर्थात दोनों वाद्य यन्त्रों पर सम्मिलित आघात से निम्नलिखित बोल सुने जा सकते हैं:-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
झिं	ऽ	च	झिं	झां	ऊं	झिं	झां	ऊं	झिं	झिं	ना
x			2			3			4		

लोक वाद्यों पर बजते हुए यह ताल शास्त्रीय संगीत की 'खेमटा ताल' के समतुल्य प्रतीत होती है।

लोक गाथाओं में प्रयुक्त नृत्य एवं वाद्य:-

लोक नृत्यों के आयोजन की परम्परा सिरमौर जनपद में प्रारम्भ से ही रही है किन्तु यहां की लोक गाथाओं के साथ इन नृत्यों का प्रयोग लोगों की आनन्दानुभूति में चार चाँद लगा देता है। गायन व नृत्य की बात हो और वाद्य यन्त्रों का नाम न लिया जाए, ऐसा बहुत कम अथवा अपवाद स्वरूप ही होता है। सिरमौर क्षेत्र में लोक वाद्यों के अनेक रूप शास्त्रीय वर्गीकरण के अनुसार घन, अवनद्ध, तत् एवं सुषिर देखने को मिलते हैं। घन वाद्यों की श्रेणी में, कांसे की थाली, करताल, पीतल का लोटा, चिमटा व घड़ा आदि तथा अवनद्ध वाद्यों में ढोल, ढोलकी या ढोलक, खंजरी, दमामा, दमामटू, नगाड़ा, डमरू, ढाकुली, घड़ैलू

व हुड़क आदि रखे गए हैं। वहीं यहां तत या तन्त्री वाद्यों का स्थान नगण्य है। 'चोड़ी' नामक गीत इकतारा वाद्य के साथ गाने की बात कुछ लोग कहते हैं । सुषिर वाद्यों के अन्तर्गत सिरमौर में बांसुरी, करनाल, रणसिंगा व शहनाई आदि प्रमुख वाद्य यन्त्र हैं । स्थानीय लोक गाथाओं में उपरोक्त सभी लोक वाद्यों का ही प्रयोग देखने को मिलता है।

सिरमौर जनपद का लोक सांगीतिक पक्ष शास्त्रीय संगीत की दृष्टि से बहुत ही विशद और व्यापक है। यहां लोक संगीत के अन्तर्गत लोकगीत,लोक गाथा, लोकनाट्य, लोकनृत्य,लोकवाद्य व लोकतालों का व्यवहार मिलता है । यहां संगीत के अन्तर्गत बहुत से प्रचलित लोकगीत व लोक गाथाओं का गायन होता है जिनमें शास्त्रीय संगीत की दृष्टि से सभी सांगीतिक तत्व स्वर, लय, ताल, मींड़, मुर्की, स्वर-संवाद, राग छाया आदि विद्यमान हैं जो इनकी रंजकता को चार-चांद लगाते हैं।

आजकल सिरमौर जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में गिने-चुने लोकगाथा गायक ही हैं जिनसे यह प्राचीन व परम्परागत गायन शैली सुनने को मिलती है, जो लोकगीतों के साथ-साथ लोकगाथाओं को गाने की इस परम्परागत प्रथा को आज भी बनाए हुए हैं । आधुनिक पीढ़ी इस अमूल्य धरोहर को भूलती जा रही है। यह लोक गायक इस लुप्त होती जा रही सांस्कृतिक धरोहर को आगामी पीढ़ी को सौंपना चाहते हैं ताकि लोक गाथाएं आने वाले समय में भी इसी प्रकार प्रचलित रहें । लोक गाथाओं पर पर बहुत से शोध भी हुए हैं जिन्होंने इस परम्परागत लोकगीत शैली के संरक्षण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । आजकल कुछ स्थानीय लोक गायक बहुत सी लोकगाथाओं व लोकगीतों को रिकार्ड करवाकर युट्यूब आदि पर डालकर अपनी इस अमूल्य धरोहर व लोक गायन शैली के संरक्षण व प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं, जिससे यह आम जनमानस तक आसानी से पहुंच रही है । लोक संस्कृति के संरक्षण के लिए भाषा एवं संस्कृति विभाग तथा विभिन्न संस्थाओं द्वारा गोष्ठियों व लोक सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है जिनमें लोक कलाकारों को प्रोत्साहित भी किया जाता है । सिरमौरी लोक संस्कृति को सहेजने व संरक्षण हेतु सभी स्थानीय कलाकारों व प्रबुद्ध विज्ञजनों द्वारा किए जा रहे सराहनीय प्रयास द्वारा ही यह परम्परागत लोक गायन शैली व लोक संस्कृति आजतक सुरक्षित है।

सन्दर्भ ग्रंथ:-

1. हरिराम जस्टा - हिमाचल प्रदेश के लोकप्रिय गाथा गीत ।
2. डॉ0 खुशी राम गौतम - सिरमौरी लोक साहित्य ।
3. डॉ0 कृष्ण लाल सहगल - सिरमौरी लोक संगीत का विश्लेष्णात्मक अध्ययन (शोध प्रबंध)1992 ।
4. डॉ0 रूप कुमार शर्मा - सिरमौर दर्पण हिमाचल कला,संस्कृति एवं भाषा अकादमी, शिमला,1991 ।
5. डॉ0 देवराज शर्मा - सिरमौरी लोक संगीत पर सीमावर्ती क्षेत्रों का प्रभाव एक तुलनात्मक अध्ययन हि0 प्र0 वि0 वि0,शिमला, 2001।
6. डॉ0 मनोज कुमार - सिरमौर जनपद की लोक गाथाओं का सांगीतिक विश्लेषण, (शोध प्रबंध) 2003 ।
7. डॉ0 राजेन्द्र तोमर - हिमाचली लोक संगीत में प्रयुक्त सांगीतिक शब्दावली का अध्ययन(शोध प्रबंध) 2005 ।
8. मोहन राठौर - हिमाचल प्रदेश का लोक संगीत, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला ।